

ସୁଚୀ

ଅଗଷ୍ଟ-୨୦୧୫

| | | |
|---|----------------------------|---------|
| ● ମହନୀୟ ଭାବନା ସ୍ଥାଧୀନତାର ଉପ୍ରେସ୍ | ଚନ୍ଦ୍ରମଣି ସେ୦୧ | ୧ |
| ● ଗାନ୍ଧୀ, ପଟ୍ଟେଳ, ନେହେରୁ ଓ ସୁଭାଷ | ଡକ୍ଟର ଅତୁଳ ଚନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ | ୩ |
| ● ଭିରିଭୂମି ବିକାଶ ନବକଲେବର-୨୦୧୫ | | ୭ |
| ● ଭାରତମାତାର ଲୁହ୍ (କବିତା) | ସୁର୍ୟ ମିଶ୍ର | ୧୯ |
| ● ପ୍ରତିଭାବାନ୍ ମହାପୁରୁଷ ପ୍ରାଣନାଥ ପଙ୍ଜନାୟକ | ଶ୍ରୀନିବାସ ଆଚାର୍ୟ | ୧୩ |
| ● ଆମ ସ୍ଥାଧୀନତା : କିଛି କଥା, କିଛି ବ୍ୟଥା | ଡକ୍ଟର ସର୍ବେଶ୍ୱର ସେଶ | ୧୮ |
| ● ମୁଣ୍ଡ ସଂଗ୍ରାମୀ ଗୋକୁଳାନନ୍ଦ | କୃଷ୍ଣ ଚନ୍ଦ୍ର ସୁଆର | ୨୦ |
| ● ହେ କଳା ଠାକୁର (କବିତା) | ହଂସନାଥ ମୁହଁଳି | ୨୨ |
| ● ଘଟପର୍ବ | ଡକ୍ଟର ପ୍ରମୋଦିନୀ ହୋତା | ୨୩ |
| ● ଲୀଳା ନାୟକ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ଧାଥ | ଡକ୍ଟର ଆରତି କର | ୨୪ |
| ● ସାନ୍ତାଳୀ ଭାଷାର ନାଟକ ଓ ତା'ର ଲୋକପ୍ରିୟତା | ଜୀବନକୃଷ୍ଣ ଦାସ ଅଧ୍ୟକାରୀ | ୨୯ |
| ● ଚିଲିକାର ଆର୍ଦ୍ର ଭୂମି ସଂରକ୍ଷଣ | ଡାକ୍ତର ଟ୍ରେଲୋକ୍ୟନାଥ ମହାରଣୀ | ୩୩ |
| ● କାନ୍ତକବି ଲକ୍ଷ୍ମୀକାନ୍ତଙ୍କ କଥା ସାହିତ୍ୟର ଦାର୍ଶନିକ ପଙ୍ଜଭୂମି | ସନ୍ତୋଷ କୁମାର ବେଜ | ୩୭ |
| ● ଗଞ୍ଜାମର ଲୋକ ସାହିତ୍ୟ | ଡକ୍ଟର ବାୟାମନ୍ତ୍ରୁ ଚଙ୍କ | ୪୨ |
| ● ଉତ୍କଳ ହିତେଷୀ ଜନ୍ମ ବିମ୍ବ | ଲେ. ଗୋବର୍ଢନ ଦୋରା | ୪୮ |
| ● ସତ୍ୟାନ୍ଦ୍ରେଷ୍ଟୀ ସତ୍ୟାନନ୍ଦ | ସତ୍ୟବାଦୀ ବଳିଆରସିଂହ | ୪୯ |
| ● ମଧ୍ୟରଭଂଜର ପ୍ରଜାମଣ୍ଡଳ ଆଯୋଳନ ଓ ସ୍ଥାଧୀନତା ସଂଗ୍ରାମ | ପ୍ରଫେସର ପ୍ରଦୀପ କୁମାର ଗିରି | ୫୪ |

| | | |
|---|-----------------------------|---------|
| ● হে প্রিয় কলাম (কবিতা) | ত্রিলোচন দাস | ৪৭ |
| ● আম সংস্কৃতিরে পান | পশ্চিত ত্রিলোচন মিশ্র | ৪৭ |
| ● বহুল ব্যবহারের জংরাজী শব্দ OK | আবিষ্য কুমার পণ্ডা | ৪৮ |
| ● শব্দ প্রদৃষ্টি ও আধুনিক মণিষ | সুকান্ত মহান্তি | ৪৯ |
| ● রহস্যালোকের দারবী লীলা : এক ভাস্তুক অনুচিত | তক্ত সংগমিত্রা উৎজ | ৫০ |
| ● শ্রীজীর্মানঙ্কর নবকলেবর | কৃষ্ণচন্দ্র পঞ্জনায়ক | ৫১ |
| ● জ্ঞান (কবিতা) | লক্ষ্মীধর দাশ | ৫০ |
| ● সংজ্ঞাত শিষ্ঠি ও কবিপুর্য্য বলদেব রথ | সুধাংশু শেখর কর | ৫১ |
| ● গহ্না পর্ব | কেৈলাস চন্দ্র জেনা | ৫২ |
| ● ভারতের স্বাধীনতা আয়োজন | অঘাপক বিক্রম কেশরী বর্মা | ৫৩ |
| ● বামঙ্গা রাজাস্বাহেব | তক্ত লক্ষ্মী নারায়ণ দাশ | ৫৪ |
| ● নারী সহিত - খোরা পার্বতী | তক্ত কৃষ্ণিবাস নায়ক | ৫৫ |
| ● ওড়িଆ ওষ্ঠা ব্রত ও পর্বপর্বাণীরে লোকসংস্কৃতির চিত্র | অঘাপক সত্যজিত দাস | ৫৬ |
| ● দারুদেবতা ও নবকলেবর | শ্যামসুন্দর রাত্রে | ৫৭ |
| ● জন্মভূমিরু যুক্তভূমি | তাপস কুমার সাহা | ৫৮ |
| ● কি রূপে ভাকিবি তুমকু হে ঠক্কুর (কবিতা) | ক্ষীরোদ চন্দ্র মহান্তি | ৫৯ |
| ● রাজ্যের ভিন্নমন্ত্র নিমত্তে সুবিধা সুযোগ | তক্ত জ্যোতির্মতী সামন্তরায় | ৬০ |
| ● সরুত মুঁ ভাগ্যবান (কবিতা) | যাঙ্গথেনী পণ্ডা | ৬০ |
| ● সপ্তসং ওড়িশা | | ৬১ |

